ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन एक अध्ययन (जोधपुर जिले के संदर्भ में)

सारांश

किसी भी राष्ट्र के विकास में उच्च शिक्षा अपनी अहम भूमिका अदा करती है क्योंकि व्यक्ति को उसके ज्ञान, संश्लेषण, विश्लेषण, आलोचनात्मक चिन्तन के विकास, दृष्टिकोण व कार्यकरने के ढंग में उच्चता की ओर अग्रसर करती है। भारत में माध्यमिक शिक्षा पर विचार करने पर ध्यान स्वतः ही राष्ट्र की प्रजातांत्रिक व्यवस्था की ओर आकृष्ट हो जाता है। जहां सभी नागरिक समान है, और सभी को अपनी योग्यतानुसार कार्य करने तथा शिक्षा के अवसर प्राप्त होने चाहिए। वहीं दूसरी ओर हमारा ध्यान ऐसे वर्गों पर भी जाता है। जो किन्हीं कारणों से महत्वाकांक्षी होते हुए भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। जिनमें से 'बालिका' भी एक ऐसा ही वंचित वर्ग है जो चाहते हुए भी अपनी विभिन्न समस्याओं के कारण माध्यमिक शिक्षा से वंचित है। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक कारणों के साथ–साथ विद्यालयों की न्यूनता अथवा दूरी, बालिका विद्यालयों की कमी/अनुपलब्धता भी माध्यमिक शिक्षा में बालिकाओं की पहुँच में बाधक रही है। अब यद्यपि सरकारी, अनुदानित एवं गैर सरकारी विद्यालयों की बढ़ी संख्या ने विद्यालयी शिक्षा में बालिका सहभागिता पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। किन्तु अब भी बालिकाओं की अपेक्षित जनसंख्या माध्यमिक शिक्षा का लाभ नहीं उठा पा रही है, किन्तु अब उनके समक्ष खुली–शिक्षा व्यवस्था का विकल्प आने से माध्यमिक शिक्षा में उनकी सहभागिता में सुधार नितान्त अपेक्षित है। यह ज्ञातव्य है कि खुली शिक्षा–प्रणाली में समय, स्थान, आयु एवं जाति सम्बन्धी कोई सीमा नहीं रखी गई तथा उसे अधिक लचीली एवं व्यावहारिक बनाने की कोशिश की गई है। खुली शिक्षा द्वारा ऐसे व्यक्तियों को शिक्षित करने की बात की गई है जो किन्हीं व्यक्तिगत अथवा सामाजिक कारणों से विद्यालय नहीं जा पाते, अथवा बीच में ही विद्यालय त्याग कर देते है। ऐसे ही व्यक्तियों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु विद्यालय स्तर पर सत्र 1989 में राष्ट्रीय खुला विद्यालय (छैै) की स्थापना की गई।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक, प्रजातांत्रिक व्यवस्था

वंदना गोस्वामी
डीन,
शिक्षा संकाय विभाग,
कालेज ——— लिखे
शहर———लिखे

मीना सिरोला
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय विभाग,
कालेज ——— लिखे
शहर———लिखे

नीति चौहान
पद————लिखे
विभाग————लिखे
कालेज ——— लिखे
शहर———लिखे

प्रस्तावना

राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहां कि भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थिति के कारण शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच नहीं पाई है। यद्यपि राजस्थान की साक्षरता दर बढ़ाने, शिक्षा का सार्वभौमीकरण करने और नामांकन बढ़ाने की दिशा में सरकार निरन्तर प्रयासरत है। इसके लिए प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु सरकार द्वारा अनेक प्रयास किये गये है। इस संदर्भ में लोक जुम्बिश, गुरु मित्र परियोजना, मध्याह्न पोषण कार्यक्रम, शिक्षा आपके द्वार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत् भी अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप, राज्य के अनेक जिलों को पूर्ण साक्षर घोषित करने के बावजदू भी आज राजस्थान मे शैक्षिक पिछड़ापन दृष्टिगोचर होता है। विद्यार्थियों को पुनः इस धारा से जोड़ने तथा माध्यमिक स्तर पर नामांकन संख्या में वृद्धि करने हेतु राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा माध्यमिक स्तर पर खुली शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया गया है।

यह एक छत्र (Umbrell) की भांति है जो सम्पूर्ण राष्ट्र में अधिक संख्या में स्थित अपने क्षेत्रीय केन्द्रों एवं अध्ययन केन्द्रों के जाल के सहयोग

से भारत की प्रत्येक जनशक्ति से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। इसके प्रमुख अधि–देश (Mandate) इस प्रकार है–

1. समाज के सभी वर्गों को उच्च गुणवत्ता मुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना।
2. विभिन्न स्तरों पर उच्च गुणवत्ता के नवीन और आवश्यकता आधारित कार्यक्रम चलाना।
3. सुविधा वंचित वर्गों के लिए देश के सभी भागों में शैक्षिक कार्यक्रम वहन योग्य लगात में उपलब्ध कराना।
4. देश में दूर तथा मुक्त शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा के मानकों का संवर्धन, समन्वयन और विनिमयन करना।

अधिकाधिक लोगों तक पहुँचने और सुविधाओं की समानता, अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में निरन्तर व्यावसायिक क्षमता का विकास तथा प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए विद्यालयी शिक्षा प्रदान करने हेतु विविध संचार माध्यमों एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। सम्पूर्ण राजस्थान राज्य के जिलों में इसके अध्ययन केन्द्रों का जाल बिछा है जो राजस्थान के लगभग सभी जिलों का प्रतिनिधित्व करते है। अतः इसे राजस्थान के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रति बालिका अनुक्रियाशीलता के अध्ययन का आधार बनाया जाना उपर्युक्त प्रतीत होता है।

मुक्त विद्यालयी व्यवस्था को मूल्य प्रभावी (Cost effective) बनाने के लिए बालिकाओं की अधिकतम अनुक्रियाशीलता अनिवार्य है क्योंकि देश की आय का एक बड़ा भाग इसके विभिन्न कार्यक्रमों के व्यवस्थापन एवं संचालन पर व्यय हो रहा है और यदि इसका लाभ जनसामान्य न उठाये तो यह निवेश तब तक सार्थक नहीं होगा जब तक कि वांछित परिणाम सामने न आये।

अतः यह जानने की आवश्यकता है कि इस प्रकार की वैकल्पिक एवं आवश्यकता आधारित व्यवस्था उपलब्ध होने पर कितनी बालिकाएँ ऐसी है जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रहने पर इसका लाभ उठा रही है? संभवतः वे सभी बालिकाएँ जो किन्हीं कारणों से औपचारिक शिक्षा में अध्ययनरत नहीं है वे सभी इस व्यवस्था में सहयोगी होनी चाहिए। अतः प्रश्न यह भी उठता है कि मुक्त अधिगम व्यवस्था में प्रवेश लेने वाली बालिकाएँ कौन है? वे राजस्थान राज्य के किस जिले में निवास करती है? उनका शैक्षिक स्तर (माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक) क्या है? वे किस संवर्ग की है? क्या केवल कतिपय जाति संवर्गों की बालिकाएँ ही इस व्यवस्था से लाभान्वित हो रही है? अथवा वंचित वर्गों यथा– अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं द्वारा भी इस लचीली एवं सुविधाप्रदायक व्यवस्था का उपयोग अपने माध्यमिक शिक्षा सम्बन्धी विकास के लिए किया जा रहा है। रक्षा संवर्ग की बालिकाएँ जिनके अधिकांश परिवारों के निवास स्थान में स्थायित्व नहीं होने के कारण क्या ये बालिकाएँ भी अपनी शैक्षिक व सामाजिक उन्नति हेतु इसके प्रति सजग है? शारीरिक विकलांग वर्ग की बालिकाएँ जिनके समक्ष अनेक शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक चुनौतियाँ है क्या इस संवर्ग की बालिकायें भी अपने जीवन साफल्य हेतु उसके प्रति अनुक्रियाशील है? क्या राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में इन सभी संवर्गों की बालिकाओं की समान अनुक्रियाशीलता है? अथवा वे अलग–अलग अनुपात में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही है?

विभिन्न संवर्गों की वे बालिकाएँ जो मुक्त विद्यालयी शिक्षा में अनुक्रियाशील है वे किन क्षेत्रों से सम्बन्ध रखती है? क्या ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवासकरने वाली बालिकायें इस व्यवस्था का समान लाभ उठा रही है? किन क्षेत्रों की बालिकाओं ने इस व्यवस्था के प्रति अधिक अनुक्रियाशीलता व्यक्त की है?

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में स्तरवार बालिकाओं की अनुक्रियाशीलता किस प्रकार की है? माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर कितनी बालिकाएँ अधिक सहभागी हो रही है? दोनों ही स्तरों पर सत्रवार इनकी सहभागिता किस प्रकार की है? क्या सत्रवार उनके नामांकन में परिवर्तन परिलक्षित होता है?

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में राजस्थान राज्य के अन्तर्गत माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर सत्रवार कुल नामांकन में प्रविष्ट बालिकाओं की सहभागिता कैसी है? अर्थात् इस व्यवस्था में सत्रवार कुल (बालक–बालिकाएँ) नामांकन में से कितने प्रतिशत बालिकाएँ में लाभन्वित हो रही है? क्या सत्रवार कुल नामांकन में बालिका नामांकन की प्रवृत्ति बढ़ी है? इस मुक्त विद्यालयी व्यवस्था में सामान्य, अन्य पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, शारीरिक विकलांग एवं रक्षा संवर्ग की बालिकाओं की सत्रवार कुल नामांकन में अनुक्रियाशीलता की प्रवृत्ति किस प्रकार की है? राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित जनसंख्या में बालिकाओं का जिलेवार, स्तरवार, संवर्गवार, क्षेत्रवार एवं माध्यमवार प्रवृत्ति किस प्रकार की है? क्या जनसांख्यिकी अनुपात के अनुसार राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के नामांकन में इनकी सहभागिता है।

इस प्रकार मुक्त राष्ट्रीय विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका अनुक्रियाशीलता के संदर्भ में इन सभी प्रश्नों पर गहनता से विचार करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। इन प्रश्नों के साथ–साथ प्रश्न यह भी है कि मुक्त विद्यालयी शिक्षा में बालिका अनुक्रियाशीलता की प्रवृत्ति किस प्रकार की है। अतः इन प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु अनुसंधात्री द्वारा अग्रांकित विषय का शोध अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

समस्या कथन –

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन एक अध्ययन (जोधपुर जिले के संदर्भ में)।

अध्ययन के उद्देश्य

जोधपुर जिले के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन (सत्र 2005–06 से सत्र 2014–15 तक) की प्रवृत्ति का निम्न संदर्भों में अध्ययन करना।

कक्षा स्तर –माध्यमिक व उच्च माध्यमिक।

संवर्गवार – रक्षा संवर्ग, शारीरिक विकलांग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य जाति।

क्षेत्रवार –ग्रामीण व शहरी।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में चूंकि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन का जोधपुर जिले के संदर्भ में अध्ययन करने का उद्देश्य रखा गया है। अतः माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विभिन्न संवर्ग (रक्षा संवर्ग, विकलांग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति), क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) की वे सभी बालिकाएं जो (सत्र 2005–06 से 2014–15 तक) जोधपुर जिले के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित है, प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या है।

प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित स्रोतों से द्वितीयक प्रदत्त प्राप्त किए गए

1. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (छप्टै) के मुख्य कार्यालय (दिल्ली) व क्षेत्रीय कार्यालय (जयपुर) में उपलब्ध अभिलेख।
2. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की वार्षिक रिर्पोट
3. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के जोधपुर जिले में स्थित अध्ययन केन्द्र।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन में संवर्ग, क्षेत्र एवं कक्षा स्तर में नामांकन के रूप में प्राप्त होने के कारण प्रदत्तों की प्रकृति संख्यात्मक (आंकिक) है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार उपरिलिखित स्रोतों से विस्तृत संख्यात्मक द्वितीयक प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए, स्वनिर्मित समंक सारणी का प्रयोग किया गया है। इसके लिए विभिन्न चर व सत्रवार सारणी निर्मित की गई है।

विश्लेषण प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों का प्रतिशत विश्लेषण एवं रेखाचित्रिय निरूपण द्वारा विश्लेषण किया गया।

जोधपुर

सूर्य नगरी के नाम से अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए इस जिले की स्थापना 1459 ई. राठौड़ सरदार राव जोधा ने की थी। जिले का क्षेत्रफल 22,850 वर्ग किलोमीटर है।

सन् 2001 की जनगणनानुसार स्त्री पुरुष लिंगानुपात 907 : 1000 है। यहाँ की कुल जनसंख्या 28ए86ए505 है। ग्रामीण क्षेत्रीय जनसंख्या 66.15% तथा शहरी क्षेत्र में 33.85% है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क्रमशः 15.81% एवं 2.76% है।

इस जिले में सत्र 2013–14 में पुरुष साक्षरता दर 72.96% एवं महिला साक्षरता दर 38.64% है। ग्रामीण क्षेत्र में 46.21% तथा शहरी क्षेत्र में 75.54% है।

जिले में माध्यमिक स्तर पर कुल 162 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में से 15 राजकीय माध्यमिक बालिका विद्यालय है। अनुदानित माध्यमिक बालिका विद्यालय एक तथा गैर अनुदानित माध्यमिक बालिका 11 है। इस प्रकार माध्यमिक स्तरीय कुल 389 विद्यालयों में से 27 बालिका विद्यालय है। उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल 106 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 23 बालिका विद्यालय है। अनुदानित बालिका विद्यालय 3 तथा एवं गैर अनुदानित विद्यालय 7 है। इस प्रकार कुल 201 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 33 उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय है।

जोधपुर जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के 3 अध्ययन केन्द्र शहरी क्षेत्र में स्थित हैं।

जोधपुर जिला देश भक्ति साहस, त्याग, संस्कृति तथा विकास के लिए सदा गौरवाशाली रहा है। तथा अपने कलात्मक एवं नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण धोरो के मरुस्थल का प्रवेश द्वारा कहे जाने वाले इस जिले की राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिका नामांकन सम्बन्धी प्रदत्तों को सारणी 4.21 में प्रस्तुत किया है।

जोधपुर जिले के एन.आई.ओ.एस. में बालिका नामांकन
(बालिका नामांकन कुल नामांकन की प्रतिशतता के रूप में)

कक्षा स्तर		वर्ग	2005.06	2006.07	2007.08	2008.09	2009.10	2010.11	2011.12	2012.13	2013.14	2014.15
माध्यमिक स्तर	संवर्ग	रक्षा संवर्ग	3.9	3.5	3.8	2.7	3.1	0.9	-	1.4	2.1	1.8
		विकलांग	-	-	-	-	-	-	0.9	1.4	0.7	0.5
		अनु.जाति	5.8	5.4	5.8	5.3	4.0	7.2	9.6	6.3	5.4	3.6
		अनु.ज.जाति	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
		सामान्य	28.9	28.5	28.9	28.0	28.5	28.8	28.2	28.9	33.6	35.2

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

	क्षेत्र	ग्रामीण	28.8	28.6	28.8	26.7	28.6	27.9	32.3	33.2	34.2	37.6
		शहरी	9.7	9.4	9.6	9.4	7.2	9.1	6.5	5.6	6.1	3.6
उच्च माध्यमिक स्तर	संवर्ग	रक्षा संवर्ग	2.7	2.3	2.7	3.6	3.3	2.3	1.2	1.9	1.0	0.8
		विकलांग	-	-	-	-	-	-	-	1.9	-	-
		अनु.जाति	2.7	2.4	2.7	3.5	9.8	9.8	9.5	9.9	8.2	4.9
		अनु.ज.जाति	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
		सामान्य	33.3	33.5	33.3	33.3	32.8	36.1	34.2	33.4	40.8	47.7
	क्षेत्र	ग्रामीण	27.8	27.6	27.8	35.1	34.4	41.7	35.3	39.3	45.9	50.0
		शहरी	11.2	11.4	11.2	5.3	11.4	6.9	9.5	7.9	4.1	3.0

नोट – सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि जोधपुर जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विकलांग, अनुसूचित जनजाति संवर्ग में बालिका नामांकन प्रतिशत शून्य अथवा नगण्य मात्र होने से इन संवर्गों की बालिका नामांकन प्रवृत्ति का पता नही लगाया जा सकता है।

माध्यमिक स्तर पर संवर्गवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यमिक स्तर पर रक्षा संवर्ग में बालिका नामांकन सत्र 2005–06 से सत्र 2009–10 तक (सत्र 2008–09 के अतिरिक्त) यथावत होने के उपरान्त आगामी सत्र में नगण्य 0.9: (कुल 111 विद्यार्थियों में से 1 बालिकाएँ) रहा है। तथा सत्र 2011–12 में यह शून्य दृष्टव्य है। तत्पश्चात् सत्र 2012–13 से सत्र 2014–15 तक नामांकन प्रतिशत आंशिक विचलन के साथ स्थिर बना हुआ है। सत्र 2005–06 में बालिका नामांकन सर्वाधिक 3.9: (कुल 52 विद्यार्थियों में से 2 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005–06 की तुलना में सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन 2.1% कम हुआ है। अतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्टिगोचर है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति में बालिका नामांकन सत्र 2005–06 से सत्र 2008–09 तक स्थिर, तत्पश्चात् आगामी सत्र में 1.3: की गिरावट दिखाई दी है। सत्र 2010–11 की तुलना में सत्र 2011–12 में नामांकन प्रतिशत में 2.4: की वृद्धि तथा 2012–13 से सत्र 2014–15 तक नामांकन में सतत् गिरावट दृष्ट्व्य है। सत्र 2014–15 में सर्वाधिक न्यूनतम बालिका नामांकन 3.6: (कुल 168 विद्यार्थियों में से 6 बालिकाएँ) रहा है एवं सत्र 2011–12 में सर्वाधिक बालिका नामांकन 9.6: (कुल 124 विद्यार्थियों में से 12 बालिकाएँ) है। सत्र 2005–06 की तुलना में सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन में 2.2: कमी हुई है। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्ट्व्य है। है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में सामान्य संवर्ग के अन्तर्गत बालिका नामांकन सत्र 2005–06 से सत्र 2012–13 तक यथावत रहने के उपरान्त आगामी सत्र में इसमें 4.7: की वृद्धि दिखाई दी है। सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशत सर्वाधिक 35.2: (कुल 168 विद्यार्थियों में से 59 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005–06 के सापेक्ष सत्र 2014–15 में नामांकन प्रतिशतता में 6.3: वृद्धि हुई है। अतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्टिगोचर है।

पश्चिमी दिशा में जोधपुर जिले की सीमा जैसलमेर से होती हुई पाकिस्तान की सीमा तक जाती है। अतः जिले में वायु सेना के सैनिक एयर फोर्स क्षेत्र में तथा बनाड छावनी में आर्मी के जवान रहते है। वायु सेना व थल सेना की यहाँ पर अलग–अलग यूनिट बनी हुई हैं। इन सभी यूनिट को केन्द्रीय सरकार के द्वारा विशेष सुविधाएँ प्रदान की जाती है। जिसके कारण इस संवर्ग की बालिकाएँ इन क्षेत्रों में रहते हुए इन विशेष सुविधाओं का लाभ उठा रही होगी तथा अपनी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रही होगी।

जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 15.81: है जो कि कुल जनसंख्या के सापेक्ष बहुत कम है। अतः इस संवर्ग की बालिकाओं का मुक्त विद्यालयी शिक्षा में वास्तविक नामांकन कम होना उचित होगा।

जोधपुर जिले में मुख्यतः खरीफ की फसल में बाजरा, मोठ, ग्वार, तिल, मूंग, ज्वार, मिर्च, कपास, मक्का तथा रबी की फसल में गेहूँ, चना, जौ, जीरा, सरसों की खेती होती है। जीरा उत्पादन अत्यधिक होने के कारण जिले में गुजरात की ऊंझा मण्डी के पैटर्न पर जीरा मण्डी बनी है। सामान्य संवर्ग की बालिकाओं का कृषि व इससे सम्बन्धित कार्यों में सहयोग रहता है। फलस्वरूप वह अपने अध्ययन हेतु अधिक समय नहीं निकाल पाती है। अतः समय की नियमितता न होने के कारण इस संवर्ग की बालिकाओं को मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान आकर्षित कर रहा होगा।

माध्यमिक स्तर पर क्षेत्रवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में बालिका नामांकन में सत्र 2005–06 से सत्र 2010–11 तक (सत्र 2008–09 को छोड़कर) आंशिक विचलन के साथ स्थिर है। तथा सत्र 2011–12 की तुलना में सत्र 2012–13 में नामांकन 0.9: बढ़ा है। सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन सर्वाधिक 37.6% (कुल 168 विद्यार्थियों में से

63 बालिकाएँ) हैं। सत्र 2005—06 के सापेक्ष सत्र 2014—15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 8.8ः वृद्धि हुई है। अतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्ट्व्य है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में शहरी क्षेत्र में बालिका नामांकन प्रतिशत सत्र 2005—06 से सत्र 2010—11 तक (सत्र 2009—10 को छोड़कर) नामांकन प्रतिशत यथावत है तथा सत्र 2011—12 में इसमें 2.6% की कमी दिखाई दी है। तदुपरान्त सत्र 2012—13 की तुलना में सत्र 2013—14 में नामांकन प्रतिशत में पूर्व सत्र के अनुरूप 6.1% दृष्ट्व्य है। सत्र 2014—15 में सर्वाधिक न्यूनतम नामांकन 3.6% (कुल 168 विद्यार्थियों में से 6 बालिकाएँ) है। सत्र 2005—06 में अधिकतम बालिका नामांकन 9.7% (कुल 52 विद्यार्थियों में से 5 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005—06 के सापेक्ष सत्र 2014—15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 6% कमी दृष्टिव्य है। अतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्ट्व्य है।

जोधपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में विश्नोई सम्प्रदाय के परिवार अधिक निवास करते है। इन परिवारों का मुख्य व्यवसाय अफीम की खेती, उसकी तस्करी तथा पशुपालन करना है। अन्य परिवारों के द्वारा बादले (मेटल की सुराही पर शनील चढ़ाया जाता है।) लाख का सामान, एल्यूमिनियम के खिलौने व सजावटी वस्तुएं तथा जोधपुर चित्र शैली, जिसमें प्रमुख रूप से भूमल निहालदे, ढोला मारु, कल्याण रागिनी, दरबारी जीवन, राजसी ठाठ, मारु के टीले, इत्यादि चित्रों को बनाते समय पीले रंग को प्रधानता दी जाती है। इन सभी खिलौने, सजावटी वस्तुएं, चित्र शैली बादलें इत्यादि को बनाने में तथा रंगों के संयोजन व चयन करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जिसमें कि महिलाओं व बालिकाओं की अहम् भूमिका होती है। अतः इन परिवारों की बालिकाओं की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया जाता है। किन्तु फिर भी वे बालिकाएँ जो कि इन परम्परागत कुटीर उद्योगों में उत्कृष्टता प्राप्त करना चाहती है वह राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित होकर शिक्षा द्वारा अपनी सृजन क्षमता को उन्नत कर लाभान्वित हो रही होगी।

जिले में अनुदानित माध्यमिक बालिका विद्यालय एक तथा गैर अनुदानित 11 है। एवं राजकीय माध्यमिक बालिका विद्यालय कुल 15 है। अधिकांश बालिका विद्यालय शहरी क्षेत्र में स्थित होंगे। फलतः इन विद्यालयों की भव्य इमारतें व आकर्षक सुविधाओं से आकर्षित होकर शहरी क्षेत्र की बालिकाएँ इस प्रकार के विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि रखती होगी।

जोधपुर जिले में माध्यमिक स्तर पर कुल बालिका नामांकन प्रवृत्ति

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में संवर्ग एवं क्षेत्रवार, माध्यमिक स्तर पर कुल बालिका नामांकन प्रवृत्ति के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 2005—06 से सत्र 2014—15 तक नामांकन प्रतिशत में घटाव एवं बढ़ोतरी के साथ विचलन दृष्ट्व्य है तथा सत्र 2014—15 में सर्वाधिक बालिका नामांकन 41.1% रहा है तथा सत्र 2005—06 के सापेक्ष सत्र 2014—15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 2.6% वृद्धि हुई हैं।

समेकन(Conslidation)

समग्र रूप से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में इस जिले की बालिका नामांकन प्रवृत्ति के संदर्भ में कहा जा सकता है कि राजस्थान नहर परियोजना से कृषि की पैदावार अच्छी है। वहीं हस्तशिल्प (बंधेज, बादले, एल्यूमिनियम के खिलौने आदि) से तैयार उत्पाद के अच्छे बाजार ने जिले में प्रति व्यक्ति आय को बढ़ावा दिया है। जिससे निवेश का उचित प्रतिफल मिलने के कारण अनेक वृहत, लघु एवं माध्यम उद्योगों की स्थापना हुई है। फलतः विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की वृद्धि हुई है व मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की ओर बालिकाएँ आकर्षित हुई हैं। जिले में मुक्त विद्यालयी शिक्षा के तीन अध्ययन केन्द्रों के शहरी क्षेत्र में उपलब्ध होने के कारण कम दूरी एवं आसान पहुँच वाले अध्ययन केन्द्रों तक बालिकाओं के पहुँचने में सरलता हुई हैं। अतः माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की नामांकन प्रतिशतता बढ़ी है।

आबादी के लिहाज से राजस्थान में दूसरा स्थान रखने वाले इस जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के मात्र 3 अध्ययन केन्द्र होने के बावजूद ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं ने शैक्षिक अवसरों का पर्याप्त लाभ उठाया है। जो बालिकाओं की शैक्षिक सजगता को प्रकट करता है किन्तु संभवतः रक्षा संवर्ग की बालिकाओं को सरकार द्वारा दी जा रही विशेष सुविधाओं के कारण तथा अनुसूचित जनजाति संवर्ग बालिकाओं में शैक्षिक जागरुकता एवं मुक्त विद्यालयी शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण की कमी होने के कारण इन दोनों संवर्गों की बालिकाओं की नामांकन प्रतिशतता अत्यन्त कम है। माध्यमिक स्तर पर सामान्य संवर्ग, ग्रामीण क्षेत्र में बालिका नामांकन प्रतिशतता अधिक दृष्ट्व्य है। संभवतः जिले में खुली शिक्षा प्रणाली के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अध्ययन केन्द्रों की संख्या में बढ़ोतरी करने पर माध्यमिक स्तर पर बालिका नामांकन में वृद्धि की जा सकती है।

राजस्थान की सूर्य नगरी व मरुस्थल का प्रवेश द्वार कहा जाने वाला यह जिला राजस्थान का सबसे बड़ा संभाग है। यहाँ राज्य की कुल आबादी लगभग 5.10ः जनसंख्या निवास करती हे। जिले में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता होने के बावजूद भी कुल विद्यार्थियों की तुलना में बालिकाओं का नामांकन 50ः से भी कम होना इस ओर संकेत करता है कि यह बालिकाएँ सामाजिक व पारिवारिक कारणों से माध्यमिक शिक्षा का लाभ नहीं उठा पा रही है। अतः इन बालिकाओं को और अधिक जागरुक बनाकर इन्हें राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के लिए और अधिक प्रेरित करने की आवश्यकता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर संवर्गवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर रक्षा संवर्ग में बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत सत्र 2005–06 में 2.7% रहा, तत्पश्चात् आगामी दो सत्रों में नामांकन प्रतिशत यथावत है। तथा सत्र 2011–12 में सत्र 2014–15 तक बालिका नामांकन प्रतिशत में 1.1% की कमी के उपरान्त अन्तिम सत्र में यह नगण्य 0.8% दृष्ट्व्य है। सत्र 2008–09 में बालिका नामांकन प्रतिशत सर्वाधिक 3.6% (कुल 7 विद्यार्थियों में से 2 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005–06 के सापेक्ष सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशत में 1.9ः की कमी हुई हैं। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी है।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति में बालिका नामांकन प्रतिशतता सत्र 2005–06 की तुलना में सत्र 2008–09 में आंशिक वृद्धि 0.8% दिखाई दी है। तत्पश्चात् सत्र 2009–10 से सत्र 2012–13 तक बालिका नामांकन 6.3% की बढ़ोतरी के साथ यथावत् दृष्ट्व्य है। न्यूनतम बालिका नामांकन सत्र 2014–15 में 4.9% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 6 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005–06 के सापेक्ष सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशत में 2.2% की गिरावट दिखाई दी हैं। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति अधोगामी दृष्ट्व्य है।

खुली शिक्षा प्रणाली में उच्च माध्यमिक स्तर पर सामान्य संवर्ग के अन्तर्गत बालिका नामांकन प्रतिशतता सत्र 2005–06 से सत्र 2009–10 में आंशिक विचलन के साथ स्थिर है। तत्पश्चात् सत्र 2010–11 में 3.3% की वृद्धि दिखाई दी है। सत्र 2011–12 से सत्र 2005–06 तक बालिका नामांकन में आंशिक विचलन तथा आगामी सत्रों में निरन्तर वृद्धि दिखाई दी है। सत्र 2014–15 में सर्वाधिक नामांकन 47.7% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 63 बालिकाएँ) है एवं सत्र 2012–13 के सापेक्ष सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में अत्यधिक वृद्धि 14.4% दिखायी दी हैं। अतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्टिगोचर है।

जोधुपर जिले में केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संवर्ग की बालिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुविधा दी गई है। जिसके अन्तर्गत इस जिले में एयर फोर्स सेन्ट्रल स्कूल तथा आर्मी सेन्ट्रल स्कूल लगभग 10 है। नौकरी में स्थानान्तरण अधिक होने के कारण यह अभिभावक बालिकाओं को इन विद्यालयों में शिक्षा दिलवाना अधिक पसन्द करते होंगे।

जिले में अनुसूचित जाति के परिवार अधिकांशतः ग्रामीण पिछड़े क्षेत्रों में निवास करते है। इस संवर्ग के परिवारों की अफीम की खेती, शराब बनाना व बेंचना तथा कचरा चुगने इत्यादि कार्यों पर अत्यधिक निर्भरता होती है। जिसके कारण इनकी प्रति व्यक्ति आय भी कम है। अतः इन परिवारों की बालिकाओं की शिक्षा पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया जाता है। तथा आर्थिक व सामाजिक कारणों से सभी बालिकाएँ मुक्त विद्यालयी शिक्षा का लाभ नहीं उठा पाती होगी।

जिले में सर्वाधिक जनसंख्या सामान्य संवर्ग की है। अधिकांश परिवार जोधपुरी कोट पेन्ट बनाने, जोधपुरी साफा बनाने व बांधने, बंधेज की साड़ियों की रंगाई करने तथा चमड़े से निर्मित मोजड़ी (जूतियाँ), डूंगरशाही ओढ़नी बनाने इत्यादि परम्परागत उद्योगों से जुड़े हुए हैं। संभावना व्यक्त की जा सकती है कि सामान्य संवर्ग की वे बालिकाएँ जो कि इन उद्योगों के द्वारा परिवार की आर्थिक रूप से सहायता कर रही है वह नियमित अध्ययन नहीं कर सकने के कारण राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित होती होगी।

उच्च माध्यमिक स्तर पर क्षेत्रवार बालिका नामांकन प्रवृत्ति

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में बालिका नामांकन प्रतिशत सत्र 2005–06 की तुलना में सत्र 2008–09 में 7.3% की वृद्धि तथा आगामी सत्र में आंशिक कमी दिखाई दी है। सत्र 2011–12 में पूर्व सत्र 2008–09 के समरूप बालिका नामांकन 35.3% दृष्ट्व्य है एवं सत्र 2012–13 से सत्र 2014–15 तक बालिका नामांकन प्रतिशतता में निरन्तर बढ़ोतरी दृष्टिगोचर है। सत्र 2014–15 तक नामांकन प्रतिशतता सर्वाधिक 50.0% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 66 बालिकाएँ) रही है। तथा सत्र 2005–06 के सापेक्ष सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 22.2% की वृद्धि हुई है। अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति ऊर्ध्वगामी दृष्टिगोचर हैं।

मुक्त विद्यालयी शिक्षा में शहरी क्षेत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिका नामांकन में सत्र 2005–06 से सत्र 2009–10 तक (सत्र 2008–09 को छोड़कर) स्थिर तत्पश्चात् सत्र 2010–11 में नामांकन में 4.5% की कमी दिखाई दी है। सत्र 2011–12 की तुलना में सत्र 2012–13 में बालिका नामांकन 1.6% कम होने के उपरान्त अन्तिम सत्र 2014–15 में न्यूनतम 3.0% (कुल 132 विद्यार्थियों में से 4 बालिकाएँ) हैं। तथा सत्र 2009–10 में बालिका नामांकन सर्वाधिक 11.4% (कुल 61 विद्यार्थियों में से 7 बालिकाएँ) रहा है। सत्र 2005–06 के सापेक्ष सत्र 2014–15 में नामांकन प्रतिशतता में (8.2%) कमी दिखायी दी है। अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बालिका नामांकन प्रतिशतता प्रवृत्ति शहरी क्षेत्र में अधोगामी दृष्टव्य हैं।

सर्वाधिक परती भूमि तथा विभिन्न प्रकार के बालूका स्तूप वाले इस जिले के खारिया खंगार कस्बे में सफेद सीमेन्ट का राज्य का सबसे बड़ा करखाना हैं यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश परिवारों के सदस्य कार्य करते हैं। विभिन्न उद्योगों के साथ–साथ यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। राजस्थान नहर

परियोजना से जिले में सिंचाई की अच्छी व्यवस्था है। जिसके फलस्वरूप यहाँ बाजरा 5000 हेक्टेयर भूमि में उत्पादित होता है। साथ ही ग्वार, मोठ,तिल, मूंग, कपास आदि की भी अच्छी पैदावार होती है। गरिमा गुप्ता (शून्य गुरुत्वाकर्षण वाली फ्लाइट में जीरो ग्रेविटी प्रयोग करने वाली), कु समता शर्मा (चमड़े पर स्वर्ण नक्काशी के लिए प्रसिद्ध), गवरी बाई (सादी मांड गायिका) तथा जमीला बानू (राजस्थान की प्रसिद्ध गायिका) जैसी महान विभूतियों के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में भी बालिका शिक्षा के प्रति जागरुकता आयी है। तथा ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकांश बालिकाएँ विभिन्न कार्यों में व्यस्त होते हुए भी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माध्यम से उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने की चाह रखती होगी। अतः यह बालिकाएँ मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में नामांकित होकर उच्च माध्यमिक शिक्षा का लाभ उठा रही होगी।

ग्रामीण जनसंख्या बाहुल्य इस जिले में ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या 66.15% तथा शहरी क्षेत्र में 33.85% है। जिसके कारण मुक्त विद्यालयी शिक्षा में इन बालिकाओं का वास्तविक नामांकन कम है। संभवतया शहरी क्षेत्र की यह बालिकाएँ जिले में स्थिति विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में नामांकित होकर उच्च माध्यमिक शिक्षा से लाभान्वित हो रही होगी।

जोधपुर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल बालिका नामांकन प्रवृत्ति

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर संवर्ग एवंक्षेत्रवार बालिकाओं की नामांकन प्रतिशतता देखने से स्पष्ट होता है कि सत्र 2005–06 से सत्र 2014–15 तक (सत्र 2011–12 से सत्र 2012–13 को छोड़कर) बालिका नामांकन प्रतिशतता में सतत् वृद्धि दृष्टव्य है। सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता सर्वाधिक 53.0% है। तथा 2005–06 की तुलना में सत्र 2014–15 में बालिका नामांकन प्रतिशतता में 14.1% की अत्यधिक बढ़ोतरी हुई हैं।

समेकन (Consolidation)

जोधपुर जिले के राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं की नामांकन प्रवृत्ति के संदर्भ में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक शिक्षा में बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत 50ः से अधिक होना जिले में बालिकाओं की शैक्षिक प्रगति का द्योतक है। ग्रामीण क्षेत्र तथा हिन्दी माध्यम में बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत उच्च होना जिले में बालिका शिक्षा के विकास का बेहतरीन उदाहरण है। सिंचाई और परम्परागत उद्योगों में निवेश के उत्पादन और आय में इजाफा हुआ है। जिससे बालिकाओं में शैक्षिक जागरुकता तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हुआ है। अतः यह बालिकाएँ मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से अधिक से अधिक लाभान्वित होने लगी हैं।

जिले में जनसंख्या 15.81% भाग का निर्माण करने वाली अनुसूचित जाति तथा रक्षा संवर्ग के परिवारों की उन्नति के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चलाई जा रही है। शैक्षिक संस्थानों और नौकरियों में इन दोनों वर्ग के लिए आरक्षण एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न ऋण और अनुदानों की व्यवस्था सरकार द्वारा की गई है। संभवतया इन सभी सुविधाओं के मिलने के कारण अनुसूचित जाति व रक्षा संवर्ग की बालिकाओं का मुक्त विद्यालयी शिक्षा के प्रति आकर्षण कम रहा है। जिले में शहरी क्षेत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल 201 विद्यालयों के होने के कारण इस क्षेत्र की बालिकाएँ इन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि रखती होंगी। फलतः खुली शिक्षा प्रणाली में इन बालिकाओं का नामांकन प्रतिशत कम दृष्टव्य है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः प्रगतिशील जिला जोधपुर में निवेश हेतु अनुकूल माहौल है। आर्थिक स्तर उन्नत होने के कारण उपभोक्ता बाजार का विस्तार हो रहा है। जिससे सभी क्षेत्रों में रोजगार का सृजन हो रहा है। बालिकाओं को राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में उच्च माध्यमिक शिक्षा हेतु पर्याप्त व अनुकूल अवसर उपलब्ध होने से जिले की प्रगति व विकास के लिए मजबूत आधार तैयार हो रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आप्टे, प्रभा : भारतीय समाज में नारी, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1996*
2. *गोयल, अरूना एवं गोयल, एस.एल.: डिस्टेन्स एज्युकेशन इन द 21जी सेन्चुरी, दीप एण्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि. न्यू देहली, 2001*
3. *गुड़, सी.वी. : डिक्शनरी ऑफ एज्यकेशन, मैकग्राव हिल कम्पनी, न्यूर्याक, 1989*
4. *तपन नीता : नीड फॉर एमपावरमेन्ट रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एण्ड न्यू देहली, 2000*
5. *दत्त, आर, 1987 : डिस्टेन्स एज्युकेशन वर्सेज ट्रेडीशनल हायर एज्युकेशन : ए फास्ट कम्पैरीज इन बी.एल. कॉल एड ऑल (एडी) स्टेडीज इन डिस्टेंस एज्युकेशन न्यू देहली, ए.आई.यू. एण्ड इग्नू इन ओपन एण्ड डिस्टेंस इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशनल रिसर्च (1988–92) वॉल्यूम–1, एन. सी.ई.आर.टी., न्यू देहली।*
6. *प्रधान, सुसान्ता कुमार एण्ड प्रधान प्रतिभा 1997 : एटीट्यूड टुवर्ड्स ओपन लर्निंग सिस्टम ए कम्परेटिव स्टेडी ऑफ फॉर्मल लेन्स, इन जनरल ऑफ एज्युकेशनल रिसर्च, वोल्यूम 34(1) जुलाई–सितम्बर, 1997 बायऊड पब्लिशिंग कम्पनी इन्क।*
7. *प्रेसर हैरीट वी. एवं सेन गीता : वूमेन्स एम्पावरमेन्ट एण्ड डेमाग्राफिक प्रोसिस मूविंग बियोंड केयर, वोल्यूम–1, पब्लिशिड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस, 2002*
8. *मृदुला 1991 : इकोनोमिक्स ऑफ द ओपन लर्निंग सिस्टम : कम्परेटिव फास्ट ऑफ हायर एज्युकेशन थ्रो इग्नू पी.एच.डी. एज्युकेशन जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी इन फिफ्थ सर्वे*

एज्युकेशनल रिसर्च (1988–92), एन.सी.ई.आर.टी. न्यू देहली।

9. *मुखोपाध्याय, एम.एण्ड सुजाता, के. 1988 : ओपन लर्निंग सिस्टम एट स्कूल लेवल जनरल ऑफ एज्युकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशन रिसर्च (1988–92) वोल्यूम–1, एन.सी.ई.आर.टी. न्यू देहली।*
10. *राव, सुधा के, 1988 : ओपन लर्निंग सिस्टम : कॉनसेप्ट एण्ड फयूचर : जनरल आूफ एज्युकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, इन फिफ्थ सर्वे एज्युकेशन रिसर्च (1988–92) वोल्यूम–1, एन.सी.ई.आर.टी. न्यू देहली।*